प्रेस विज्ञप्ति

देहरादून 21 मार्च 2014। अपने आप को जानो की मैं कौन हूँ, तो इगो से फ्री हो जाएगें। सबसे बड़ा दुश्मन है इगो। जब मनुष्य स्वंय को पहचान लेता है की मैं शरीर से अलग एक चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ, तो पॉच विकार छुट जाते है। पॉच विकार छुटने से फिर प्यूरिटी, पीस, लव, हैप्पीनेस और पेशेन्स स्वतः आ जाता है। प्यूरिटी मे जो ओनेस्टी है तो मनुष्य के विचारों मे परिवर्तन आता है। विचार बदलने से मनुष्य का चरित्र बदल जाता है और वह ईश्वर से प्यार करने लगता है। ईश्वर, खुदा दोस्त अगर साथ है तो सच्चाई, हिम्मत, विश्वास तुरन्त काम करता है, और कभी भी नाउम्मीदी का, निरासाई का, टेन्शन का ख्याल भी नही आ सकता है। जब मनुष्य स्वंय को भूल जाता है और स्वंय को आत्मा न समझ शरीर समझता है तभी सभी विकार प्रवेश करते है। अगर अपने को इस शरीर से अलग एक चैतन्य शक्ति आत्मा अनुभव करे तो आत्मा का न तो कोई कुल होता है न कोई जाति न कोई अभिमान न क्रोध न लोभ न मोह न अहंकार। यह सभी विकार तभी प्रवेश करते है जब हम स्वंय को शरीर समझते है। परमात्मा का आदेश है की स्वंय को आत्मा समझ मुझे याद करो तो मैं तुम्हे सभी पापो से मुक्त कर दूगॉ। यह उद्गार 98 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी (मुख्य प्रशासिका, ब्रह्मकुमारीज, आबू पर्वत) ने आज दिव्य अनुभूती समारोह मे व्यक्त किये। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सुभाष नगर स्थित सभागार में दिव्य अनुभूती समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रेमलता बहन जी ने कहा की जो मनुष्य अपने समय को सफल करता है वह अपने जीवन मे सफलता की ऊचॉइयो को छुता है। परमपिता परमाात्मा ने हम आत्मा रूपी बच्चो को यह शिक्षा दी है की अपने जीवन के एक–एक श्वॉस को कैसे सफल करे। क्योंकि अगर समय व्यर्थ जाता है तो वह हमारे संकल्प रूपी खजाने को खाली करता है और साथ–साथ हमारी सोच मे नकारात्मकता पैदा करता है, इसलिए बाबा कहते है बच्चे श्वासो–श्वास मुझ एक परमात्मा को याद करो तो आपका समय सफल हो जाएगा। परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिवान है उनकी याद में रहने से हमको शक्ति मिलती है परन्तु उस शक्ति को कैसे यूज करे वह अक्ल होना चाहिए। जैसे भगवान सत्य है, ऐसे हमारे सूक्ष्म संकल्पो में शुद्धि, शान्ति और सच्चाई हो। सर्व शक्तिवान की शक्ति क्या है उसको अपने जीवन मे अनुभव करना है। परमात्मा की शक्ति की अनुभूती हो गई तो सबकुछ सहज हो जाता है।

चण्डीगढ़ से पधारे राजयोगी ब्रह्मकुमार अमीर चन्द जी (प्रभारी उत्तर भारत, ब्रह्मकुमारीज) ने कहा की आत्मा से परमात्मा का सम्बन्ध जोड़ना इसको ही दिव्य अनुभूती कहा जाता है। यह दिव्य अनुभूती मनुष्य को राजपद प्राप्त कराती है अर्थात ताज, तिलक और तख्त तीनो ही प्राप्त किए जा सकते है। ताज अर्थात जीवन में पावनता का प्रकाश आ जाने से राजयोग और राजयोग से राजाई संस्कार जागृत होने लगते है। तिलक अर्थात आत्मिक वृत्ती बनी रहने से विश्व बन्धुत्व वाली स्थिति आ जाती है। तख्त अर्थात आत्मा की अजर अमर अविनाशी स्मृती से भय–शोक खत्म हो आनन्द प्राप्त हो जाता है और मनुष्य बेफिक्र बादशाह बन जाता है।

लन्दन से पधारे ब्रह्माकुमार महेश भाई जी ने कहा की भगवान की दुआए उसे ही मिलती है जिसका खुद में विश्वास, भगवान में विश्वास और औरों में भी विश्वास हो। और इन ईश्वरीय दुआओ को जो केयर, शेयर और दुसरो को प्रेरित करना जानता हो तो उनके जीवन में खुशियॉ भर जाती है।

इस अवसर पर राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रेमलता बहन जी ने शब्दो द्वारा सभी का धन्यवाद किया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आदरणीय भ्राता हरीश रावत जी (मा0 मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड) ने कहा कि देश विदेश में इस संस्था के सभी सेवा केन्द्र विश्व को एक परिवार के रूप में परिवर्तन करने के लिए सराहनीय कार्य कर रही है। विश्व में शान्ति स्थापन हो यही इस संस्था का लक्ष्य है तथा हरेक मनुष्य में नेतिक मुल्यों को बढ़ावा देने के लिए यह संस्था बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है।